गुरबाणी अनुभव

भाग - १

'**विचारों**' को प्रकट करने के लिए कई साधन प्रयोग किये जाते हैं —

'**इशारों**' द्वारा
'**बोली**' द्वारा
'**लेखनियों**' द्वारा
'**छू**' (infection) द्वारा
तीव्र भावनाओं की **अबोल बोली** (vibration of intense feelings) द्वारा, आदि ।

हमारे मनोभाव तथा भावनाओं की 'रंगत' की तीव्रता, तीक्ष्णता तथा दामनिक शक्ति अनुसार ही विचारों का एक-दूसरे पर प्रभाव पड़ता है ।

'**मायिकी मंडल**' में जो —

सोच
विचार
संकल्प
विकल्प
मनोभाव (emotions)
भावनाएँ
वासनाएँ

उत्पन्न होती हैं — वह **त्रिगुणी मायिकी 'रंगत'** अथवा—

काम
क्रोध
लोभ
मोह
अहंकार

की भावनाओं तथा वासनाओं के कई सूक्ष्म स्वरूप में प्रकट होती हैं । इस प्रकार के विचार हमारे **दिमागी ज्ञान तक 'सीमित' होते हैं ।**

जब इन विचारों, भावनाओं तथा मनोभावों पर **ईश्वरीय प्रकाश की 'झलक' पड़ती है,** तब इन्हें **'आत्मिक ज्ञान' अथवा 'अनुभवी ज्ञान' कहा जाता है।**

जिस प्रकार सूर्य की रोशनी सदैव प्रकाश दे रही है — उसी प्रकार **ईश्वर की उपस्थिति का प्रकाश भी सदैव, असीम तथा अपार प्रकाशित हो रहा है । इसी 'ईश्वरीय मंडल' के आत्मिक 'प्रकाश' में से 'अनुभवी ज्ञान' उत्पन्न होता है ।**

जब यह 'आत्मिक प्रकाश' अथवा **'cã ज्ञान'** गुरुओं, भक्तों, सन्तों द्वारा मायिकी मंडल में **'वाणी' द्वारा प्रकाशित होता है,** तब इसको—

'गुरबाणी'
'भक्त बाणी'
'गुरुमुख बाणी'
'संत वचन'
'गुरु उपदेश'
'गुरु दीक्षा'
'सच बाणी'
'अंमृत बाणी'
'अनहद बाणी'
'निर्मल बाणी'

‘गुरू का वचन’
‘उत्तम श्लोक’
‘हरि बाणी’
‘प्रेम बाणी’
‘गुण बाणी’
‘सतिगुर वाक’
‘प्रिय के वचन’
‘अटल वचन’
‘उत्तम बाणी’
‘धुर की बाणी’
‘खसम की बाणी’
‘प्रभु बाणी’
‘रूढ़ी बाणी’
‘पूरी बाणी’
‘अचरज बाणी’
‘प्रिय बोला’
‘अकथ कथा’
‘सतिगुर बान’

आदि कहा जाता है ।

जब कोई **‘विचार’** हमारे मन में उत्पन्न होता है, तब उस पर हमारे **अन्त: करण अथवा व्यक्तित्व की ‘रंगत’ चढ़ी होती है ।** यद्यपि मायिकी विचारों के **लगातार अभ्यास द्वारा यह ‘शक्तिमान’ हो जाते हैं,** परन्तु यह मानसिक शक्ति **‘सीमित’ होती है,** जो त्रिगुणी मायिकी मंडल पर ही ‘**हावी’ हो सकती है ।**

अभ्यास द्वारा अर्जित इस ‘**मानसिक शक्ति’ की ‘आत्मिक मंडल’ तक ‘पहुँच’ या ‘दखल’ नहीं है ।**

आत्मिक मंडल में केवल **ईश्वरीय ‘हुक्म’ की आत्मिक शक्ति ही काम करती है ।** इसलिए जब ‘जीव’ ईश्वरीय **‘हुक्म’ के अनुकूल (भाणे में) एक-**

सुर (in-tune) हो जाता है, तब उसके—

विचारों
भावनाओं
मनोभावों
इशारों
बोली
लेखनी

में 'आत्मिक भावनाओं की 'रंगत' आ जाती है ।

जिस प्रकार सूर्य की प्रत्येक '**किरण'** में **सूर्य के सारे गुण** -उष्णता, प्रकाश, जीवन रौं, शक्ति आदि परिपूर्ण होते हैं — उसी प्रकार 'आत्मिक मंडल' में से उत्पन्न '**अनुभवी आत्मिक ज्ञान' के सूक्ष्म मनोभावों में भी ईश्वरीय 'दामनिक शक्ति' तथा 'गुण' परिपूर्ण होते हैं ।**

इसलिए गुरु-अवतारों-महापुरुषों की रचनाओं में **आत्मिक**—

मनोभाव
भावनाएँ
अनुभव-प्रकाश
दामनिक शक्ति
प्रेम स्वैपना
प्रेम-रस
प्रेम रंग
विस्मादमयी अहलाद
गुप्त आत्मिक भेद
सच
ठंड
शान्ति

आदि, **'रवि रहे भरपूर' हैं** — जो हमारी अल्प मायिकी बुद्धि की **'पकड़' अथवा समझ-बूझ से दूर हैं ।**

परन्तु गुरबाणी को बुद्धि मंडल का ही **'विषय' समझ लेना** तथा इसे **'शाब्दिक अर्थ' तक ही 'सीमित' रखना एक भूल है ।**

वास्तव में **'गुरबाणी'** —

इलाही मंडल

नानक मंडल

संत मंडल

cã-मंडल

सचखण्ड

बेगमपुरा

निज घर

अविचल नगर

अनुभव नगर

आपनड़ा घर

सुख महिल

हरि का धाम

सच घर

बैकुंठ नगर

सहज घर

'धुर'

की 'वस्तु' है ।

यह **सतिगुरुओं की 'बाणी'**—

'पवित्र-पावन'

'अनहद'

'नाम'

'शबद'

'सति स्वरूप'

'जुगो-जुग'

‘अटल’

‘अविनाशी’

‘अंमृत’

‘निर्मल’

‘वाह-वाह’

‘अमुलीक लाल’

‘रतन’

‘भक्ति भंडार’

‘गुप्त’

‘आश्चर्यजनक’

‘अदृष्ट’

‘अगोचर’

‘तत् बाणी’

है, **तथा ‘धुर’ ‘आत्मिक मंडल’ में से सतिगुरु के पावन हृदय में उतरी थी** — जिसे आवश्यकता अनुसार उन्होंने उस समय की **स्थानीय भाषाओं में** अपने पावन मुखारबिन्द द्वारा उच्चारित तथा प्रकट किया ।

वास्तव में यह **‘बाणी’ इलाही भावनाओं का ‘प्रकाश’ है, जो—**

वाणी रहित है

अबोल है

अक्षरहीन है

चुप प्रीत है

प्रेम स्वैपना है

प्रकाश स्वरूप है

ज्ञान स्वरूप है

हुकम स्वरूप है

अंमृत स्वरूप है

शब्द स्वरूप है

नाम स्वरूप है

अनहद धुन है

इसी कारण **यह ‘बाणी’ ‘देश काल’ से रहित है तथा ‘अनहद धुनी’ द्वारा सारे खण्डों-cã.Mk में ‘फैलिओ अनुराग’ है,** अथवा सर्वज्ञ रवि रही भरपूर (परिपूर्ण) है तभी **इस बाणी को ‘जग-चानण’ कहा गया है ।**

गुरबाणी इसु जग महि चानणु
करमि वसै मनि आए ।। **(पृ. ६७)**

हम भाग्यशाली हैं कि ऐसी अनुभवी ‘**धुर की बाणी’** हमारी अपनी सीधी-सादी, **सरल बोली में** उच्चारण की गयी तथा सतिगुरु ने असीम बख्शिश द्वारा इस ‘बाणी’ को **सदा के लिए ‘संसार’ को ‘प्रकाश’ देने के लिए ‘गुरू ग्रन्थ साहिब’ के स्वरुप में ‘संग्रह’ किया ।**

यह अनहद ‘बाणी’, देश, काल, मजहब या धर्म में **‘सीमित’ नहीं हो सकती ।** इस ‘बाणी’ के **‘सर्वज्ञ’ तथा अनन्त होने का यह सबूत है कि गुरू ग्रन्थ साहिब में** सिख गुरू साहिबों के इलावा **अनेक समकालीन एवं कई मतों, देशों के अलग-अलग समय में हुए भक्तों, सन्तों, महापुरूषों की ‘बाणी’ भी शामिल है, जो एक ही ‘आत्मिक मंडल’ के ‘प्रकाश’ में से** उन भक्तों के हृदयों द्वारा भिन्न-भिन्न भाषाओं, देशों तथा कालों में प्रकट होती रही है ।

जिस प्रकार एक ही ‘**नानक ज्योति’** गुरु साहिबों के **दस स्वरूपों में प्रकाशित** होती रही, उसी प्रकार यह ‘अनहद बाणी’ भी **सीमित ‘बोली’** तथा **सीमित ‘अक्षरों’** में प्रकाशमान हुई है, जिसे हम ‘**गुरू ग्रन्थ साहिब’ के स्वरूप में मानते हैं ।** इसका मतलब यह है कि **‘अक्षर’ या ‘बोली’ के रूप धारण करने से भी, यह बाणी ‘अक्षर’ या ‘बोली’ में ‘सीमित’ नहीं की जा सकती।**

अखरी नामु अखरी सालाह ।। अखरी गिआनु गीत गुण गाह ।।
अखरी लिखणु बोलणु बाणि ।। अखरा सिरि संजोगु वखाणि ।।
जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ।। (पृ. ४)

अखर सासत्र सिंम्रित पुराना ।। अखर नाद कथन वख्याना ।।...
दृसटिमान अखर है जेता ।।
नानक पारब्रहम निरलेपा ।। (पृ. २६१)

बावन अछर लोक त्रै सभु किछु इन ही माहि ।।
ए अखर खिरि जाहिगे ओइ अखर इन महि नाहि ।। (प. ३४०)

इसलिए यह कहना गलत है कि यह बाणी जो हम **गुरुसिखों को** 'विरासत' में मिली है, **केवल हम सिक्खों की 'सम्पत्ति' है,** अपितु यह तो **सम्पूर्ण विश्व का साँझा जुगोजुग 'प्रकाश-स्तम्भ'** है ।

परथाइ साखी महा पुरुख बोलदे साझी सगल जहानै ।। (पृ. ६४७)

खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ।। (पृ. ७४७)

इसलिए यह 'गुरबाणी' **हम गुरसिक्खों की 'विरासत' ही नहीं बल्कि 'अमानत' भी है,** जिसके **अनुभवी आत्मिक 'तत्-ज्ञान' के प्रकाश को संसार के कोने-कोने तक फैलाना हमारा पहला तथा मुख्य 'कर्त्तव्य' बनता है ।**

परन्तु अत्यन्त खेद की बात है कि सतिगुरु के इस **अमूल्य आत्मिक 'खजाने' की 'विरासत' से हम स्वयं भी पूरा-पूरा लाभ नहीं उठा सके ।**

संसार में इस बाणी के **सार्थक 'तत्-ज्ञान' को फैलाना तो क्या था,** बल्कि गुरुबाणी को **केवल**—

पाठ-पूजा
कर्म-काण्ड
भाईचारक व्यवहार
स्वार्थ-पूर्ति
माया कमाने के लिए
पाखण्ड छुपाने के लिए
रागों के प्रकटाव के लिए
वाद-विवाद
खुश्क ज्ञान
व्याख्या करने
लेख लिखने
किताबें छपवाने
भद्र पुरुष बनने

के लिए ही प्रयोग किया जाता है ।

दो जीवों के 'ख्याल' अथवा 'भावनाएं' एक ही

सतह (wave length)
रंग (colour)
तीक्ष्णता (intensity)
शक्ति (voltage)

के हों, तब ही उनकी आपस में—

एकसुरता
असर
प्रभाव
मेल
संगत
समायी
लेन-देन
लाभ
सांझ

हो सकती है ।

'गुरबाणी' आत्मिक मंडल की **'वस्तु'** है जो—

अति सूक्ष्म इलाही 'सतह'
आत्मिक प्रेम स्वैपना
आत्मिक तीक्ष्णता
दामनिक शक्ति

की प्रतीक है ।

दूसरी ओर, इस त्रिगुणी मायिकी मंडल में रहते तथा व्यवहार करते हुए हमारी भावनाएं, मनोभाव तथा ख्याल भी **मायिकी मंडल के प्रभाव अधीन अति निम्न श्रेणी अथवा सतह** (wave-length) **के हो गये हैं,** जिन्हें अभ्यास द्वारा हमने अति तीव्र तथा शक्तिशाली बना लिया है ।

इसलिए ‘गुरबाणी’ तथा हमारे ख्यालों अथवा भावनाओं की —

सतह (wave-length)
रंगत (colour)
तीक्ष्णता (intensity)
शक्ति (voltage)

में अत्यन्त ‘फर्क’, ‘फासला’, अन्तर तथा दूरी है ।

इसी कारण तुच्छ **‘मायिकी रंगत’ वाला मन गुरबाणी की पवित्र-पावन ‘आत्मिक सतह’** (Divine wave-length) **तक नहीं ‘पहुंच’ पाता ।**

इसलिए हमारे **‘मन की’** गुरबाणी से—

एक सुरता
असर
मेल
संगत
साँझ
समायी
लाभ
आदान-प्रदान

नहीं होता ।

यही कारण है कि हम हलाही बाणी के —

भाव अर्थ
आन्तरिक भाव
भावपूर्ण भावनाँए
आत्मिक उड़ान
अनुभव-प्रकाश
गुप्त आत्मिक भेद
तत् ज्ञान

से वंचित रहते हैं तथा 'कदर-कीमत' नहीं पा सके हैं ।

पाठु पड़ै ना बूझई भेखी भरमि भुलाइ ।। (पृ. ६६)

मनमुखि करम करहि नही बूझहि बिरथा जनमु गवाए ।। (पृ.६७)

पड़ि वादु वखाणहि सिरि मारे जमकाला ।।
ततु न चीनहि बंनहि पंड पराला ।। (पृ २३१)

पाठ पड़ै नही कीमति पाइ ।। (पृ ३५५)

पाठु पड़िओ अरु बेदु बीचारिओ निवलि भुअंगम साधे ।।
पंच जना सिउ संगु न छुटकिओ अधिक अहंबुधि बाधे ।। (६४१)

किआ पड़ीऐ किआ गुनीऐ ।।
किआ बेद पुरानां सुनीऐ ।।
पड़े सुने किआ होई ।।
जउ सहज न मिलिओ सोई ।। (पृ. ६५५)

गिआनु धिआनु सभु कोई रवै ।।
बांधनि बांधिआ सभु जगु भवै ।। (पृ ७२८)

मारगि मोती बीथरे अंधा निकसिओ आइ ।।
जोति बिना जगदीस की जगतु उलंघे जाइ ।। (पृ १३७०)

गिआन हीणं अगिआन पूजा ।।
अंध वरतावा भाउ दूजा ।। (पृ १४१२)

इलाही गुरबाणी के लिए हमारा '**आदर-भाव**' **अथवा** '**कदर-कीमत**' केवल—

सुन्दर रूमालों
सुन्दर मंजी साहिब
सुन्दर पालकी
सुन्दर मन्दिर
'धूप'-'दीप'
सजावट

आदि तक 'सीमित' है !

परन्तु यह 'धुर की बाणी'—

अमूल्य है

अपार है

अनहद है

आत्मिक प्रकाश है

अंमृत है

शबद है

नाम है

इसलिए इसकी '**कदर-कीमत' आत्मिक अनुभवी स्तर से भी होनी चाहिए, जो अनुभव-प्रकाश के 'तत्-ज्ञान' द्वारा गुरबाणी को—**

समझने

बूझने

पहचानने

अनुभव करने

से ही हो सकती है ।

जैसे कि गुरबाणी में दर्शाया है—

गगा गुर के बचन पछाना ।।
दूजी बात ना धरई काना ।।
रहै बिहंगम कतहि न जाई ।।
अगह गहै गहि गगन रहाई ।। (पृ. ३४०)

बाणी बूझै सचि समावै।। (पृ. ४१२)

हाहै हरि कथा बूझु तूं मूड़े ता सदा सुखु होई ।। (पृ. ४३५)

जुगि जुगि बाणी सबदि पछाणी नाउ मीठा मनहि पिआरा ।। (पृ. ६०२)

बूझहु हरि जन सतिगुर बाणी ।। (पृ. १०२५)

अंम्रित बाणी सबदि पछाणी दुख काटै हउ मारा ।। (११५३)

गुर की बाणी सबदि पछाती साचि रहे लिव लाए ।।(पृ. ११५५)

यह स्पष्ट है कि **इलाही बाणी को समझने के लिए केवल दिमागी ज्ञान, मन की उक्तियाँ-युक्तियाँ तथा फिलोस्फियाँ ही 'पर्याप्त' नहीं -** बल्कि इस **'धुर की बाणी' के गुप्त सार-तत्-ज्ञान को—**

समझने

बूझने

जानने

पहचानने

आनन्द लेने

के लिए आत्मिक प्रकाश के 'अनुभवी ज्ञान' की आवश्यकता है।

इसी कारण इस पवित्र-पावन **'cã बाणी' को कोई विरले गुरमुख ही अनुभव द्वारा जान-पहचान, बूझ तथा विचार सकते हैं ।**

सफल सु बाणी जितु नामु वखाणी ।।
गुर परसादि किनै विरलै जाणी ।। (पृ. १०३)

अंम्रित बाणी गुर की मीठी ।।
गुरमुखि विरलै किनै चखि डीठी ।। (पृ. ११३)

बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुखि होइ ।। (पृ. ९३५)

अनहद बाणी गुरमुखि जाणी बिरलो को अरथावै ।। (पृ. ९४५)

सचा सबदु सची है बाणी ।।
गुरमुखि विरलै किनै पछाणी ।। (पृ. १०४४)

वाहु वाहु बाणी सति है गुरमुखि बूझै कोइ ।। (पृ. १२७७)

सूर्य की भाँति 'इलाही मंडल' में से भी **'इलाही रौं'** अथवा—

शबद

नाम

बाणी

धुन

नाद

रुनझुन

आत्मिक प्रकाश

आदि **सदैव 'परिपूर्ण' हैं ।**

इस '**इलाही रौं**' अथवा '**शबद' की 'धुन' को ही 'धुर की बाणी' कहा गया है ।**

धुर की बाणी आई ।।
तिनि सगली चिंत मिटाई ।। (पृ. ६२८)

गुरू नानक साहिब को जब 'इलाही रौं' आती थी, तब वह कहते थे, 'मरदानिआ, रबाब वजा, बाणी आई है ।'

सतिगुर की बाणी सति सति कर जाणहु गुरसिखहु
हरि करता आपि मुहहु कढाए ।। (पृ. ३०८)

ता मै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ।। (पृ. ५६६)

जैसी मै आवै खसम की बाणी
तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ।। (पृ. ७२२)

दासनि दासु कहै जन नानकु
जेहा तूं कराइहि तेहा हउ करी वखिआनु ।। (पृ. ७३४)

हउ आपहु बोलि ना जाणदा
मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ ।। (पृ. ७६३)

नानकु बोलै तिस का बोलाइआ ।। (पृ. १२७१)

गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ ।। (पृ. १२७९)

जो निज प्रभ मो सो कहा
सो कहिहो जग माहि ।। (पा. १०)

इलाही मंडल का ‘**प्रकाश**’ **अमित तथा ‘अनहद’ है,** इस लिए ‘**बाणी**’ **भी ‘अनहद’ है ।**

अनहद बाणी सबदु वजाए ।। (पृ. २३१)

अनहद बाणी नादु वजाइआ ।। (पृ. ३७५)

अनहद बाणी गुरमुखि वखाणी
जसु सुणि सुणि मनु तनु हरिआ ।। (पृ. ७८१)

यह इलाही ‘प्रकाश’ न बदलता है तथा **न नाश होने वाला है ।** इसलिए बाणी भी **अविनाशी** तथा **‘सच’ है ।**

सतिगुर की बाणी सति सरूपु है गुरबाणी बणीऐ ।। (पृ. ३०४)

वाहु वाहु बाणी सचु है गुरमुखि लधी भालि ।। (पृ. ५१४)

हरि जीउ सचा सचु है सची गुरबाणी ।। (पृ. ५१५)

गुर का बचनु बसै जीअ नाले ।।
जल नही डूबै तसकरु नही लेवै भाहि न साकै जाले ।।(पृ. ६७९)

सची बाणी सचु है सचु मेलि मिलाइआ ।। (पृ. ९५४)

निसि बासुर नखिअत्र बिनासी रवि ससीअर बेनाधा ।।
गिरि बसुधा जल पवन जाइगो इक साध बचन अटलाधा ।। (पृ. १२०४)

यह **cge में से उत्पन्न हुई है, इसलिए यह cã-बाणी है ।**

गुरमुखि बाणी ब्रहमु है सबदि मिलावा होइ ।। (पृ. ३९)

लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रह्म बीचार ।। (पृ. ३३५)

वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ ।। (पृ. ५१५)

बोले साहिब कै भाणै ।। दासु बाणी ब्रह्म वखाणै ।। (पृ. ६२९)

नानक बोले ब्रह्म बीचारु ।। (पृ. ११३८)

यह, माया का, मैल-रहित ‘निर्मल प्रकाश’ है, इसलिए यह बाणी भी **‘निर्मल बाणी’** है ।

निरमल सबदु निरमल है बाणी ।। (पृ. १२१)

निरमल बाणी सबदि वखाणहि ।। (पृ. ११५)

निरमल गिआनु धिआनु अति निरमलु
निरमल बाणी मंनि वसावणिआ ।। (पृ. १२१)

निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी ।। (पृ. २७९)

निरमल बाणी निज घरि वासा ।। (पृ. ३६२)

निरमल बाणी नादु वजावै ।। (पृ. ४११)

हरि निरमलु निरमल है बाणी हरि सेती मनु राता हे ।। (१०५२)

यह **'इलाही प्रकाश'** युग-युगान्तरों से प्रकाशित हो रहा है, इसलिए **'बाणी'** भी **'युगो-युग बाणी'** है ।

जुगि जुगि बाणी सबदि पछाणी
नाउ मीठा मनहि पिआरा ।। (पृ. ६०२)

चहु जुग महि अंम्रितु साची बाणी ।। (पृ. ६६५)

तिसु जन की है साची बाणी ।।
गुर कै सबदि जग माहि समाणी ।।
चहु जुग पसरी साची सोइ ।। (पृ. ११७४)

यह **त्रिगुणों से दूर, अगोचर तथा इलाही मंडल का तत् है, इसलिए यह 'गुप्त बाणी' है ।**

अदिसटु अगोचरु गुर बचनि धिआइआ ।।
पवित्र परमु पदु पाइआ ।। (पृ. ४४२)

गुपती बाणी परगटु होइ ।।
नानक परखि लए सचु सोइ ।। (पृ. ९४४)

यह **'ईश्वरीय प्रकाश मंडल' विस्मादमयी है,** इसलिए **बाणी भी 'विस्मादमयी' तथा 'वाहु वाहु' है ।**

वाहु वाहु पूरे गुर की बाणी ।। (पृ. ७५४)

वाहु वाहु बाणी सति है गुरमुखि बूझै कोइ ।। (पृ. १२७७)

विस्मादु नाद विस्मादु वेद ।। (पृ. ४६३)

बाणी में माया के त्रिगुणी अन्धकार तथा **‘भ्रम’ को दूर करने की सामर्थ्य है** । इसलिए **यह बाणी ‘गुरू’ रूप है ।**

गुर के बचनि कटे भ्रम भेद ।। (पृ. १७७)

गुर कै बाणि बजर कल छेदी
प्रगटिआ पदु परगासा ।। (पृ. ३३२)

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ।। (पृ. ९८२)

सतिगुर बचन बचन है सतिगुर
पाधरु मुकति जनावैगो ।। (पृ. १३०९)

जिस प्रकार धूप में से — गर्मी, प्रकाश, शक्ति तथा जीवन-रौं **‘अलग’ नहीं की जा सकती,** उसी प्रकार **इलाही ‘प्रकाश’ में—**

बाणी
शबद
नाम
अमृत
हुकम
हरि रस
शक्ति
राग
नाद
धुन
प्रेम

आदि, इस तरह **ताने-बाने, ओत-प्रोत, मिले-जुले तथा समाये हुए हैं** कि इन्हें **अलग नहीं किया जा सकता ।**

यह **इलाही ‘प्रेम-खेल’, ‘गुरप्रसाद’ की ‘देन’ है, जिसका आनन्द ‘गुरप्रसाद’ द्वारा बख्शे हुए गुरुमुख प्यारे ही उठा सकते हैं।**

सफल सु बाणी जितु नामु वखाणी ।।
गुर परसादि किनै विरलै जाणी ।। (पृ. १०३)

अंम्रित सबदु अंम्रित हरि बाणी ।।
सतिगुरि सेविऐ रिदै समाणी ।। (पृ. ११९)

सचु बाणी सचु सबदु है भाई गुर किरपा ते होइ ।। (पृ. ६३८)

जे को बचनु कमावै संतन का सो गुरपरसादी तरीऐ ।।
(पृ. ७४७)

अंम्रित बचन रिदै उरि धारी तउ किरपा ते संगु पाई ।।
(पृ. ७४९)

अंम्रित बाणी सतिगुर पूरे की
जिसु किरपालु होवै तिसु रिदै वसेहा ।। (पृ. ९६१)

निरमल बाणी को मंनि वसाए ।।
गुर परसादी सहसा जाए ।। (पृ. १०६२)

इस ईश्वरीय **'प्रकाशमयी' मंडल को गुरबाणी में**—

सचखंड
सहज घर
बैकुंठ नगर
बेगम पुरा
संत मंडल
सच घर
अनुभव नगर
अविचल नगर
हरि का धाम
हरि दर
आपनड़ा घर

कहा गया है, जहाँ सदैव—

सतिसंग
हरि गुण गायन

होता रहता है । साँसारिक मायिकी लोगों की **यहाँ पहुँच नहीं ।**

हम केवल **‘शाब्दिक बाणी’** द्वारा उस ईश्वरीय मंडल की **प्रकाश-मयी खेल** के विषय में **अपनी सीमित बुद्धि द्वारा कल्पना करते हैं, जो नि:सन्देह अधूरी, मिथ्या या गल्त हो सकती है ।**

सुणि वडा आखै सभु कोइ ।।
केवडु वडा डीठा होइ ।। (पृ. ९)

सुणि सुणि आखै केती बाणी ।।
सुणि कहीऐ को अंतु न जाणी ।। (पृ. १०३२)

बोलि अबोलु न बोलीऐ
सुणि सुणि आखणु आखि सुणाइआ । (वा.भा.गु. १६/११)

गुरू नानक साहिब स्वयं **‘ज्योति स्वरूप’** थे, **‘शबद-स्वरूप’** थे, परन्तु हम कलयुगी जीवों पर तरस करके, कृपा करके, उन्होंने पाँच तत्वों का भौतिक शरीर धारण किया । ताकि इन आँखों से उनके ‘दर्शन’ करके, इन कानों द्वारा उनके मुखारबिन्द से ‘वचन-वाणी’ सुनकर हमारे मन में **श्रद्धा उत्पन्न हो** तथा हम उनके **आत्मिक मार्गदर्शन के प्रकाश में अपने जीवन को ढाल कर ‘cã मंडल’ में पहुँचने के लिए ‘सत्संग’ द्वारा उद्यम कर सकें ।**

जन नानकु बोलै अंम्रित बाणी ।।
गुरसिखां कै मनि पिआरी भाणी ।।
उपदेसु करे गुरु सतिगुरु पूरा
गुरु सतिगुरु परउपकारीआ जीउ ।। (पृ. ९६)

अब गुरू जी का भौतिक शरीर तो नहीं है, परन्तु उन्होंने **अपना आत्मिक**—

‘प्रकाश’
‘ज्ञान’

‘दीक्षा’

‘हुक्म’

‘उपदेश’

‘विचार’

‘आदेश’

‘वचन’

‘खजाना’

गुरबाणी के रूप में हमारे मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया है । इसके **अतिरिक्त** हमारे पास कोई सच्चा-सुच्चा तथा उचित मार्गदर्शन नहीं है । इसलिए हमने **‘बाणी रूप’ गुरू के चरणों में बैठकर गुरबाणी के प्रकाश एवं मार्गदर्शन में, जीवन को सीध देना है ।**

गुर का बचन बसै जीअ नाले ।। ....
निरधन कउ धनु अंधुले कउ टिक
मात दुधु जैसे बाले ।। (पृ. ६७९)

मै गुरबाणी आधारु है गुरबाणी लागि रहाउ ।। (पृ. ७५९)

साची बाणी अनदिनु गावहि
निरधन का नामु वेसाहा हे ।। (पृ. १०५६)

पूरे गुर की पूरी बाणी ।।
पूरै लागा पूरे माहि समाणी ।। (पृ. १०७४)

गुरु की बाणी सिउ लाइ पिआरु ।।
ऐथै ओथै एहु अधारु ।। (पृ. १३३५)

गुरबाणी का ‘स्पर्श’ तब ही प्राप्त हो सकता है, यदि हम **गुरबाणी के अर्थ की ओर ध्यान दें ।** अन्यथा हम गुरबाणी की ‘**पारस कला’ से स्पर्श नहीं कर पाते** तथा हमारे मन पर गुरबाणी का नाम मात्र या बिल्कुल भी **असर नहीं होता । यही** कारण है कि इस युग में अनगिनत—

गुरूद्वारों

सत्संग समागमों

कीर्तन अखाड़ों
कथा-व्याख्यान
धर्म प्रचार
गुरमत पत्रिकाओं
पाठ
पूजा
जप
तप
कर्म-क्रिया

के बावजूद, हम गुरुबाणी के आन्तरिक आत्मिक आशय से दूर तथा विमुख होते जा रहे हैं ।

पड़ीऐ गुणीऐ किआ कथीऐ जा मुंढहु घुथा जाइ ।। (पृ. ६८)

पड़ीऐ गुनीऐ नामु सभु सुनीऐ अनभउ भाउ न दरसै ।।
लोहा कंचन हिरन होइ कैसे जउ पारसहि न परसै ।। (९७३)

'बात' तो केवल **'ध्यान'** की है । **ध्यान के बिना हमारा मन गुरबाणी से नहीं छूता** तथा इस **'स्पर्श' के बिना मन पर गुरबाणी की पारस-कला नहीं घटती ।** यही कारण है कि सारी उम्र अनेक पाठ करते-सुनते हुए भी हमारी **मानसिक तथा आत्मिक दशा में परिवर्तन नहीं आता, ऊँची नहीं उठती तथा हम 'आत्मिक जीवन' से वंचित रहते हैं ।**

मनुआ दह दिस धावता ओहु कैसे हरि गुण गावै ।। (पृ. ५६५)

मनूआ डोलै दह दिस धावै बिनु रत आतम गिआन ।। (पृ. १०१३)

इहु मनूआ खिनु न टिकै बहु रंगी
दह दह दिसि चलि चलि हाढे ।। (पृ. १७१)

गुरबाणी को —

पढ़ने
सुनने

कीर्तन करने

मानने

अभ्यास करने

द्वारा **मन, 'नाम रंग' में रंगा जाता है ।**

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ।।
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ।। (पृ. २)

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ।।
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ।। (पृ. ४)

जिनी सुणि कै मंनिआ तिना निज घरि वासु ।। (पृ. २७)

उपदेसु जि दिता सतिगुरू सो सुणिआ सिखी कंने ।।
जिना सतिगुर का भाणा मंनिआ तिन चड़ी चवगणि वंने ।। (पृ. ३१४)

भगति भंडार गुरबाणी लाल ।।
गावत सुनत कमावत निहाल ।। (पृ. ३७६)

गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै
जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ।। (पृ. ६६९)

गुर बाणी कहै सेवकु जनु मानै
परतखि गुरू निसतारे ।। (पृ. ९८२)

गुरबाणी की '**पारस कला' के स्पर्श से,** अवश्य ही हमारे मन पर '**आत्म-कला' घटनी शुरू हो जायेगी ।** हमारा 'मानसिक' तथा **'आत्मिक जीवन' बदलेगा ।** किसी भाग्यशाली क्षण हमारे अन्दर भी **'नाम' का प्रकाश हो सकता है ।**

हमारी पिआरी अंम्रित धारी ।।
गुरि निमख न मन ते टारी रे ।।१।।रहाउ।।
दरसन परसन सरसन हरसन ।।
रंगि रंगी करतारी रे ।। (पृ. ४०४)

इह बाणी जो जीअहु जाणै
तिसु अंतरि रवै हरिनामा ।। (पृ. ७९७)

अंतरि प्रेमु परापति दरसनु ।।
गुरबाणी सिउ प्रीति सु परसनु ।। (पृ. १०३२)

सर्वप्रथम हमारा ध्यान बाणी के शाब्दिक अर्थों की ओर होगा । **धीरे-धीरे बाणी के 'भाव अर्थों' से 'अंर्तीव भावों' की ओर मुड़ता हुआ 'बाणी' में ही लीन होता जायेगा ।**

क्योंकि इस 'धुर की बाणी' में इलाही 'रस', इलाही 'रंग', इलाही प्रेम, इलाही उत्साह तथा **विस्मादमयी अवस्था परिपूर्ण है ।** इसलिए जिस गुरमुख ने इस **इलाही बाणी को 'परसा' है, 'जीउ जाना है' (अन्तरात्मा में अनुभव किया है), उसके** जीवन में **सारे इलाही गुण**—

रंग
रस
प्रेम
उमाह
उत्साह
चाव
सत
संतोष
दया
क्षमा
धैर्य
निर्मलता
श्रद्धा-भावना
नम्रता
मैत्री-भाव
सेवा-भाव
स्वयं अर्पित करना

आदि, **सहज ही प्रकट होते हैं ।**

इस प्रकार गुरुमुखों के अन्तरात्मा में **'नाम का प्रकाश' रवि रहिआ भरपूर हो जाता है** तथा '**अंतरि रवै हरिनामा'** होकर उनका 'अस्तित्व' इलाही रस, स्वाद, प्रेम में **भाव-विभोर हो जाता है ।**

ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी ।। ....
ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ।। (पृ. २७३)

जो जो ओना करम सुकरम होइ पसरिआ ।। (पृ. १३६३)

'साध-संगत'अथवा बख्शे हुए **गुरुमुख-प्यारों के 'मेल' तथा 'संगति' में ध्यान पूर्वक बाणी का पाठ करते हुए तथा 'नाम' अभ्यास करते हुए, हमारे मन की मैल धीरे-धीरे उतरनी शुरू हो जाती है । हमारा 'मन' हल्का होकर, मायिकी मंडल में से निकल कर 'गुब्बारे' की भांति आत्मिक मंडल में 'उड़ान' भरता हुआ, आत्मिक प्रकाश-मंडल में हिलोरे लेता हुआ किसी अकथनीय इलाही 'रहस्यमयी प्रकाश' के 'झलकारों' का आनन्द उठाता है ।**

इस प्रकार 'मायिकी मंडल' में से निकल कर जब हमारे मन पर '**आत्मिक प्रकाश' की 'झलकें' पड़ती हैं, तब हमारा 'अनुभव' खुलता है ।**

इसी **'अनुभव-प्रकाश' द्वारा ही हमारा मन 'आत्म-प्रकाश' से 'एक सुर' होकर 'धुर की बाणी' के 'प्रकाश मयी' 'तत्व ज्ञान' को 'समझ'-'जान'-'बूझ'-'पहचान' सकता है तथा गुरबाणी के 'तत्व' ज्ञान का अन्र्तात्मा में लाभ उठा सकता है ।**

गुरमुखि बाणी ब्रहमु है सबदि मिलावा होइ ।। (पृ. ३९)

सबदै सादु जाणहि ता आपु पछाणहि ।।
निरमल बाणी सबदि वखाणहि ।। (पृ. ११५)

जुगि जुगि बाणी सबदि पछाणी
नाउ मीठा मनहि पिआरा ।। (पृ. ६०२)

गुरबाणी निरबाणु सबदि पछाणिआ ।। (पृ. ७५२)

अनहद बाणी पूंजी ।।
संतन हथि राखी कूंजी ।। (पृ. ८९३)

सचा आपि सदा है साचा बाणी सबदि सुणाई ।। (पृ. ९१२)

अनहत बाणी गुर सबदि जाणी
हरि नामु हरि रसु भोगो ।। (पृ. ९२१)

तिनि करतै इकु चलतु उपाइआ ।।
अनहद बाणी सबदु सुणाइआ ।। (पृ. ११५४)

अंम्रित बाणी ततु वखाणी गिआन धिआन विचि आई ।।
गुरमुखि आखी गुरमुखि जाती सुरती करमि धिआई ।। (१२४३)

दूसरे शब्दों में इस **अनहद 'धुर की बाणी' को 'समझने'-'बूझने' तथा इसके 'तत्व ज्ञान' के प्रकाश का रंग-रस पान करने के लिए—**

लगातार 'सति-संगत'
शबद अभ्यास
गुर प्रसाद

आवश्यक है ।

गुर की बाणी गुर ते जाती
जि सबदि रते रंगु लाइ ।। (पृ. १३४६)

इस प्रकार गुर-वाक्—

"इह बाणी जो जीअहु जाणै
तिसु अंतरि रवै हरिनामा ।।"

की '**आत्म-कला'** हमारे **मन पर घट सकती है ।**

दूसरे शबदों में, इस—

अंमृत-रूप
नाम-रूप
शबद-रूप
गुरू-रूप
तत्व-ज्ञान-रूप
प्रकाशमयी
रसमयी
प्रेम मयी

‘गुरबाणी’ का पूर्ण आत्मिक लाभ उठाने के लिए हमारी ‘सुरति’ को ‘मायिकी बुद्धि मंडल’ में से उठकर आत्म-मंडल के ‘तत्व ज्ञान’ के ‘प्रकाश’ में अनुभव द्वारा उड़ान भरनी पड़ती है—जहाँ से यह ‘धुर की बाणी’ आयी है ।

□